# इतिहास के पन्नों में सर्व विद्या नगरी बनारस की शैक्षिक पृष्ठभूमि

**मनीष मिश्र**
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र
*श्री जय नारायण मिश्र पीजी,कॉलेज, लखनऊ*

***शोध–सार***

*दुनिया भर में अपनी यात्रा के दौरान मार्क ट्वेन ने वाराणसी की प्राचीनता के बारे में देखा और लिखा है कि "बनारस इतिहास से भी पुराना है, परंपरा से भी पुराना है, पौराणिक कथाओं से भी पुराना है और इन सभी को मिलाकर जितना पुराना दिखता है, उससे दोगुना है"। वाराणसी, जिसे बनारस या काशी के नाम से भी जाना जाता है, उत्तर प्रदेश में गंगा के तट पर एक ऐतिहासिक व् प्राचीन शहर है, जो उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से 320 किलोमीटर (200 मील) दक्षिण–पूर्व में है। यह हिंदू धर्म और जैन धर्म के सात पवित्र शहरों में सबसे पवित्र है और बौद्ध धर्म के विकास में इस स्थान का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। कुछ हिंदुओं का मानना है कि वाराणसी में मृत्यु मोक्ष लाती है। यह पवित्र शहर आर्य लोगों द्वारा स्थापित सबसे आदिम शहरों में गिना जाता है। प्रस्तुत लेख में हमने इस सांस्कृतिक नगरी काशी की शिक्षा व्यवस्था के इतिहास को समझने का प्रयास किया है।*

***मुख्य शब्दः*** *बनारस, विद्या एवं शिक्षा, इतिहास।*

भारतीय धर्मग्रंथों एवं किवदंतियों के अनुसार, वाराणसी की स्थापना भगवान शिव ने की थी। वाराणसी नाम संभवतः उत्तर और दक्षिण की और बह रही दो नदियों वरुणा और अस्सी के नाम से पड़ा है (जूलियन, पी 354) एक और अनुमान यह है कि शहर का नाम वरुणा नदी से निकला है। ऋग्वेद में शहर को कासी या काशी के रूप में जाना जाता है, जो शिक्षा के प्रमुख शहर के रूप में सदियों से विख्यात है काशी नाम का उल्लेख स्कंद पुराण में भी किया गया है। (पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, मार्च 2007) पुरातात्विक साक्ष्य बताते हैं कि वाराणसी 11वीं या 12वीं शताब्दी ईसा पूर्व में वैदिक काल के निवासियों द्वारा में स्थापित हुई थी (bhu-ac-in 23 मई 2013 को पुनः प्राप्त)। अथर्ववेद के अनुसार यह देशी जनजाति द्वारा बसा हुआ था। वाराणसी 23 वें जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ और अन्य शुरुआती तीर्थंकरों का भी घर था। धीरे धीरे वाराणसी शिक्षा, साहित्य और उद्योग के एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में विकसित हुआ साथ ही साथ यह अपने मलमल और रेशमी कपड़े, इत्र, हाथी दांत के काम और के लिए प्रसिद्ध था। मूर्तिकला (जायसवाल, 2009, पृष्ठ 206)

बुद्ध काल से पूर्व उत्तर भारत का 16 महाजनपद के रूप में महत्वपूर्ण राजनीतिक विभाजन किया गया था। इसका उल्लेख अंगुत्तर निकाय में 16 महाजनपदों की सूची में मिलता है। वाराणसी, 16 महाजनपदों में से एक काशी की राजधानी थी। माना जाता है कि यहां 528 ईसा पूर्व के आसपास बौद्ध धर्म की स्थापना हुई थी। धर्मचक्रप्रवर्तन की शिक्षा महात्मा बुद्ध ने प्रथम अवसर पर यही दी थी। (डेनिसन, 1986 पृष्ठ 121)

जब ह्वेनसियांग ने 635 ईस्वी में वाराणसी का दौरा किया तो उसने प्रमाणित किया कि वाराणसी शहर धार्मिक, साहित्यिक और कलात्मक गतिविधियों का केंद्र था, और यह गंगा के पश्चिमी तट के साथ लगभग 5 किलोमीटर (3.1 मील) तक फैला हुआ था। (वाटर्स, 1904 P. 48)। 8वीं शताब्दी में जब आदि शंकर ने वाराणसी के एक आधिकारिक संप्रदाय में शिव की पूजा की स्थापना की तब से शहर का धार्मिक महत्व और भी अधिक बढ़ता रहा । (ट्वेन, पृष्ठ 482)

अथर्ववेद, महाभारत और पाली ग्रंथों जैसे अंगुत्तरनिकाय में कई जातक और जैन ग्रंथों में

हमें वाराणसी के संदर्भ मिलते हैं। बौद्ध काल में इस शहर को काशी के नाम से जाना जाता था। ब्राह्मणवादी और जैन परंपराओं के मुख्य ग्रंथ वाराणसी को तीर्थ (तीर्थयात्रा का केंद्र) के रूप में संदर्भित करते हैं और गंगा–घाट पर विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों और सीखने के स्थान के रूप में भी हैं। ऐसा लगता है कि वैदिक काल के दौरान वाराणसी शिक्षा के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध नहीं था। प्राचीन काल में वैदिक संस्कृति सप्त सैन्धव क्षेत्र में फैली हुई थी, जिसका केंद्र कुरुक्षेत्र के आसपास था। (अल्टेकर, 1948, पृष्ठ 114) वास्तव में, वैदिक धर्म कई सदियों बाद वाराणसी पहुंचा। शुरुआत में वाराणसी के लोग इस धर्म को आसानी से स्वीकार नहीं करते थे। वे लंबे समय तक इसके पक्ष में नहीं थे। (इबिद, पृष्ठ 115) शतपथ ब्राह्मण से यह स्पष्ट है कि बनारस के राजा धृतराष्ट्र ने वैदिक धर्म से इनकार कर दिया क्योंकि शातनिक भरत के राजा ने अश्वमेध के अपने घोड़े का अपहरण कर लिया था। (सतपथ ब्राह्मण, 13–5) ऐसा लगता है कि महाभारत के बाद तक्षशिला और वाराणसी को महत्व मिला।

सूत्र और महाकाव्य काल के दौरान उत्तर भारत में वैदिक धर्म और संस्कृति का प्रसार हुआ। तक्षशिला वाराणसी और मिथिला शिक्षा और दर्शन के महत्वपूर्ण केंद्रों के रूप में विकसित हुए (मुखर्जी, 1957, पृष्ठ 333)। वाराणसी उपनिषद काल के दौरान वैदिक सभ्यता का एक प्रसिद्ध केंद्र बन गया। अजातशत्रु विद्या और साहित्य के संरक्षक थे। तक्षशिला शिक्षा का सबसे प्रसिद्ध स्थान था जिसने भारत के लगभग सभी भागों से विद्वानों को आकर्षित किया। जातकों ने उल्लेख किया है कि तक्षशिला के साथ वाराणसी के सांस्कृतिक संपर्क के कारण दूर–दूर से छात्र वहां सीखने के लिए आते थे। (फॉसबॉल, पृष्ठ 263) महा–धम्म–पाल के अनुसार जातक कुमारा धम्म–पाल को सीखने के लिए काशी राज्य से तक्षशिला भेजा गया था। ( Ibid p263) कोसिया और तित्तिरी जातक बताते हैं कि बनारस के प्रसिद्ध आचार्यों ने तीन वेदों और अठारह शिल्पों को पढ़ाया। छठी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान बौद्ध और जैन साहित्य के अनुसार बनारस संभवतः पूर्वी भारत में बौद्ध शिक्षा का सबसे प्रसिद्ध केंद्र था। बुद्ध ने सबसे पहले यहां अपने उपदेशों का प्रचार किया (कॉवेल, संख्या 123,150) । बनारस के बाहरी इलाके में सारनाथ मठ मगध राजा अशोक के संरक्षण में शिक्षा का एक प्रसिद्ध केंद्र बन गया। सातवीं शताब्दी के दौरान इसमें बालकनियों और हॉल की पंक्तियों के साथ देदीप्यमान और सुंदर इमारतें थीं। (अल्टेकर, 1948, पृ.114) इसमें 1500 भिक्षु छात्र थे। पुरातात्विक साक्ष्यों से पता चलता है कि यह 12वीं शताब्दी ईस्वी तक बौद्ध शिक्षा का उत्कर्ष केंद्र बना रहा। बौद्ध दुर्जन जातक बताते हैं कि बनारस के शिक्षकों ने लगभग 500 युवा ब्राह्मणों को शिक्षा प्रदान करने के लिए विश्व ख्याति प्राप्त की थी (वाल्टर, पृष्ठ 48)। वाराणसी के प्रतिष्ठित आचार्यों के अधीन अध्ययन करने के लिए विदेशी विद्वान वाराणसी आते थे। मौर्य काल के दौरान वाराणसी में सारनाथ ने शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया था। मौर्य शासक अशोक महान ने बुद्ध को उनके उपदेश के पवित्र स्थान के रूप में श्रद्धांजलि देने के लिए स्थान का दौरा करने के बाद भिक्षुओं के निवास के लिए राजधानी में सिंह स्तंभ और विहार का निर्माण किया। दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से शुंग कुषाण काल के दौरान दूसरी शताब्दी ईस्वी तक वाराणसी और सारनाथ शहर में भी साहित्यिक, सांस्कृतिक और कलात्मक गतिविधियाँ चलती रहीं। गुप्त काल के पुरातात्विक साक्ष्यों से पता चलता है कि वाराणसी कला और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। (चट्टोपाध्याय, 1986, पृष्ठ 36)

कन्नौज के हर्षवर्धन (606–648 ई) के शासनकाल के दौरान चीनी यात्री ह्वेनसांग ने वाराणसी का दौरा किया और कई महत्वपूर्ण सांस्कृतिक विशेषताओं और वाराणसी और सारनाथ के स्थलों का उल्लेख किया। उन्होंने देखा कि लोगों में बौद्ध और ब्राह्मणवादी संस्कृति का अध्ययन करने और ज्ञान प्राप्त करने की तीव्र इच्छा थी। (बील, खंड II, पृष्ठ 44–45) 8 वीं

शताब्दी ईस्वी के बाद वाराणसी ने वर्तमान दशाश्वमेध के दक्षिण में विस्तार करना शुरू कर दिया ,यह क्षेत्र पहले शैक्षिक गतिविधियों में लगे हुए हिंदू संतों द्वारा बसाया गया था और इन संतों ने कई छोटे आश्रमों की स्थापना की थी। कालान्तर में ये आश्रम ब्राह्मण शिक्षा के केंद्र के रूप में विकसित हुए। (पांडे, 1979, पृष्ठ 155–156) 9वीं और 10 वीं शताब्दी में वाराणसी गुर्जर–प्रतिहार वंश के शासन के अधीन था। इस वंश के बाद के शासक भी शिक्षा और संस्कृति के संरक्षक थे । यह दिखाने के लिए कोई सबूत नहीं है कि बनारस दसवीं शताब्दी ईस्वी के दौरान सीखने की एक हिंदू सीट थी (अल्टेकर, पृष्ठ 87–88) भविष्य पुराण में केवल यह उल्लेख किया गया है कि काशी हिंदू शिक्षा का एक प्रसिद्ध केंद्र होगा। (भविष्य पुराण, 51,2.3) बनारस में राजघाट की खुदाई में मिली मुहरें चतुर्विद्या नामक चार वेदों के एक अध्ययन केंद्र के अस्तित्व को दर्शाती हैं। (सुकुल, पृष्ठ 90) वाराणसी के सभी शैक्षणिक केंद्र व्यक्तिगत आचार्यों द्वारा चलाए जा रहे थे और शायद कोई संगठित शिक्ष्ण संस्थान नहीं थे जहां बड़ी संख्या में छात्र अध्ययन कर सकें। (सुकुल, पृष्ठ 90–91)) व्यक्तिगत शिक्षक अपने शिक्षण के पवित्र कर्तव्य को स्वयं निभा रहे थे। सम्भवतः एक शिक्षक के अधीन विद्यार्थियों की संख्या पाँच सौ तक ही सीमित थी। (अल्टेकर, पृ 88) इस प्रकार बनारस के आचार्य विद्यार्थियों को उनके घर पर ही पढ़ाते थे। अल–बिरूनी 11वीं शताब्दी की शुरुआत में एक अरब यात्री था वह लिखता है कि काशी पूरे उत्तर भारत में शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र था। गढ़वाल वंश के शासन काल में शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की दृष्टि से 11वीं और 12वीं शताब्दी को वाराणसी का सबसे अंतिम काल माना जाता है। गढ़वाल राजवंश के शासकों ने सारनाथ में विशाल मंदिरों, गंगा घाटों और बौद्ध विहारों का निर्माण किया। (राणा, 2005, पृष्ठ 22–29) गढ़वाला राजा गोविंदचंद्र (1114–54 ई) और उनकी रानी कुमारदेवी को तीर्थयात्रा और शिक्षा के महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में शहर के समुचित विकास का श्रेय दिया जाता है।वह ब्राह्मणवादी धर्म, कला और शिक्षा के महान संरक्षक थे। (शर्मा, 2010, पृष्ठ 1–10) कुमारदेवी का झुकाव बौद्ध धर्म की ओर था, जिन्होंने सारनाथ में कई स्मारकों की बहाली की और नए बौद्ध विहार (भिक्षुओं के लिए संघराम) का निर्माण किया।

ग्यारहवीं और बारहवीं शताब्दी के दौरान वाराणसी में संस्कृत शिक्षा को दो खंडों में विभाजित किया गया था। पारंपरिक वैदिक पाठशाला में वेद, साहित्य, व्याकरण, दर्शन, न्याय, मीमांसा, सांख्य, योग, वेदांत वैशेषिक और खगोल विज्ञान और ज्योतिष या आयुर्वेद का विशेष ज्ञान दिया गया था। अन्य पाठशालाओं में छात्रों को अठारह सिपा या कलाएँ सिखाई जाती थीं (सुकुल, पृष्ठ 94)। ये पाठशालाएँ छह शास्त्रों का ज्ञान प्रदान करने वाले प्रसिद्ध मंदिरों और मठों से जुड़ी हुई थीं। शिक्षा के साथ–साथ वाराणसी के आचार्यों ने अपने छात्रों को भोजन और जीवन की अन्य आवश्यकताएं प्रदान कीं। वे उन्हें परिवार के सदस्य के रूप में मानते थे। गहड़वाल राजाओं ने वाराणसी में रहने वाले विद्वान व्यक्तियों को अपनी आजीविका के लिए गांव को गोद के रूप में दिया। भारतीय चिकित्सा के पिता धन्वंतरि का जन्म इस शहर में काशीराज के रूप में हुआ था, जिन्होंने सुश्रुत को विज्ञान पढ़ाया जो रस–प्रक्रिया के विशेषज्ञ बन गए और सर्जरी के भी (अल्टेकर, पृष्ठ 116)। 1194 में शहर ने मुस्लिम शासक कुतुब–उद–दीन ऐबक के आगे घुटने टेक दिए, ऐबक ने शहर में कई मंदिरों, शिक्षा संस्थानों को नष्ट करने का आदेश दिया। मुस्लिम दुर्दान्तियों के अधिकार में रहने के लगभग तीन शताब्दियों तक काशी की प्रतिष्ठा में गिरावट होती गई (सिंह, पृष्ठ 453)। इसके कारण कई ब्राह्मण परिवार दक्षिण भारत में पलायन कर गए। लेकिन फिर भी यहां संस्कृत शिक्षा जीवित रही। वेदों को अब खुले स्थानों के बदले अब ऊंची आवाज में कमरों के एकांत में पढ़ाया जाता था । राजघाट किले के विनाश के बाद क्षेत्र के स्थानीय नागरिकों को जंगल साफ करके पश्चिम और दक्षिण पूर्व की ओर स्थानांतरित करना होना पडा। (सुकुल, पृष्ठ 94) मोहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल के

दौरान ( 1325–1351 ई.) वाराणसी एक बार फिर संस्कृत शिक्षा के केंद्र के रूप में फला–फूला। संप्रभु के दरबारी कवि ने बताया कि व्याकरण, भाषा विज्ञान, आयुर्वेद, ज्योतिष, खगोल विज्ञान और धातुविद्या में विशेषज्ञ विद्वानों की संख्या थी। कुल्लभट्ट ने इस अवधि के दौरान वाराणसी में मनुस्मृति पर अपनी टिप्पणी लिखी (पांडे, 1974, पृष्ठ116–117)। लेकिन बाद में फ़िरोज़ शाह तुगलक ने 1376 में वाराणसी क्षेत्र में हिंदू मंदिरों को और अधिक नष्ट करने का आदेश दिया। अफगान शासक सिकंदर लोदी ने शहर में हिंदू धर्म का दमन जारी रखा और 1496 में शेष पुराने मंदिरों में से अधिकांश को नष्ट कर दिया। इनसे जुड़े शिक्षण संस्थानों का भी यही हश्र हुआ। इस प्रकार व्यक्तिगत शिक्षक ही शिक्षा का एकमात्र स्रोत बचे थे। उन्हें अपने नए शासकों के हाथों काफी उत्पीड़न का भी सामना करना पड़ा। (उक्त) मुस्लिम शासन के बावजूद वाराणसी मध्य युग के दौरान बुद्धिजीवियों और धर्मशास्त्रियों का आकर्षण का केंद्र बना रहा, जिसने आगे धर्म और शिक्षा के सांस्कृतिक केंद्र के रूप में अपनी प्रतिष्ठा में योगदान दिया। भक्ति आंदोलन के प्रमुख स्तम्भ कबीर और रविदास वाराणसी में पैदा हुए थे जिन्होंने सामाजिक–आर्थिक सुधारों और साहित्यिक विकास के लिए कार्य किया था। पूरे भारत और दक्षिण एशिया से कई प्रतिष्ठित विद्वानों और प्रचारकों ने इस शहर का दौरा किया। सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक ने वाराणसी का दौरा किया और अपनी शिक्षाओं का प्रसार किया (मित्र, 2002, पृष्ठ 182)।

अपने शासनकाल के शुरुआती वर्षों के दौरान मुगल सम्राट अकबर ने 1567 ईस्वी में वाराणसी पर विजय प्राप्त की और इसे लूटने का आदेश दिया। वाराणसी का पुनर्निर्माण 1584 के बाद हुआ जब इलाहाबाद का किला सूबे का मुख्यालय बन गया। अकबर हिंदू धर्म का संरक्षक बन गया और उसने फिर से कई स्मारकों का निर्माण किया। उसके बाद महाराष्ट्र और कर्नाटक के कई विद्वान परिवार वाराणसी आए और स्थायी रूप से यहां बस गए। उन्होंने वाराणसी में छात्रवृत्ति को बढ़ावा दिया। 1500–1800 ई. की अवधि के दौरान संस्कृत विद्वता और साहित्य में बनारस का योगदान अन्य की तुलना में बहुत अधिक रही है। समय के साथ शाहजहाँ और दाराशिकोह वाराणसी के प्रसिद्ध विद्वानों के संरक्षक बन गए। 1660 ई. में शिक्षा व्यवस्था का वर्णन करते हुए बर्नियर लिखते हैं कि वाराणसी में कोई संगठित संस्था नहीं थी ,शिक्षक पूरे शहर में फैले हुए थे और उनके आवासों पर अध्यापन किया जाता था। कुछ शिक्षकों के पास चार से छह छात्र थे लेकिन अधिकांश प्रसिद्ध शिक्षकों के बारह से चौदह शिष्य थे जो व्याकरण, पुराण, दर्शन, चिकित्सा खगोल विज्ञान आदि सीखते थे (बर्नियर, पृष्ठ 341)। सदियों से, वाराणसी को श्सर्व विद्या की राजधानीश (ज्ञान की राजधानी) के रूप में भी जाना जाता रहा है, यह शिक्षा और सीखने के एक महान केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित रही है। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्राचीन काल से दुनिया के सभी हिस्सों से लोग दर्शनशास्त्र, संस्कृत, ज्योतिष, आधुनिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञान सीखने के लिए वाराणसी आते रहे हैं। एक नियमित शिक्षण संस्थान की स्थापना में पहला कदम अंबर के महाराजा जय सिंह द्वारा 1585 ई. में उनके द्वारा निर्मित बिंदु महादेव मंदिर के पास कंगन वाली हवेली में उठाया गया था। इसने सामाजिक रूप से उच्च कुलों के पुत्रों को शिक्षा प्रदान करने के लिए व्यवस्था की। वाराणसी में औपचारिक शैक्षणिक संस्थान की स्थापना की दिशा में वास्तविक कदम 1791 में उठाया गया था जब ईस्ट इंडिया कंपनी के एजेंट जोनाथन डंकन ने संस्कृत पाठशाला की स्थापना की और बाद में यह सरकारी संस्कृत कॉलेज बन गया और 1958 से इसे वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया है। (सुकुल, 1974, पृष्ठ 99) । 1910 में, अंग्रेजों ने वाराणसी को एक नया भारतीय राज्य बनाया, जिसका मुख्यालय रामनगर था। 1904 में महान सुधारक पं. मदन मोहन, मालवीय ने शास्त्रीय सांस्कृतिक परंपरा और आधुनिक विज्ञान को संरक्षित करने के लिए आधुनिक हिंदू विश्वविद्यालय के लिए अभियान शुरू किया। भारत में थियोसोफिकल सोसायटी

की संस्थापक एनी बेसेंट ने 1898 में एक सेंट्रल हिंदू कोलाज शुरू किया। इस स्कूल ने बाद में 1916 में प्रतिष्ठित बनारस हिंदू विश्वविद्यालय का गठन किया जो वर्तमान में दुनिया के अग्रणी विश्वविद्यालयों में से एक है। वाराणसी में प्रतिष्ठित अन्य शैक्षणिक संस्थान संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ और सारनाथ में केंद्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान हैं। इस प्रकार वाराणसी आर्य सभ्यता एवं संस्कृति के प्रारम्भ से ही बौद्ध एवं ब्राह्मण विद्या का महत्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध केन्द्र रहा है।

## सन्दर्भ सूची


1. डायना एल. ईसीके (1983) :बनारस सिटी ऑफ लाइट, नई दिल्ली।
2. बनासल, सुनीता पंतरू हिंदू तीर्थयात्रा, पुस्तक महल।
3. ट्वेन, मार्क (1898) : भूमध्य रेखा का अनुसरण– एक यात्रा।
4. दुनिया भर में, हार्टफोर्ड।
5. शेरिंग,एम.ए. (1975): बनारस द सेक्रेड सिटी ऑफ़।
6. जूलियन,एम,लाइफ एंड पिलग्रिमेज ऑफ ह्यूएन – त्सियांग, ।
7. वाराणसी–भारत सहस्राब्दी वर्ष का अन्वेषण (प्रेस रिलीज),पर्यटन मंत्रालय, सरकार। भारत, ।
8. महत्वपूर्ण पुरातात्विक खोजें, मार्च,2007 बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, बीएचयू द्वारा पुनर्प्राप्त.23 मई 2013।
9. जायसवाल, विदुला (2009) : प्राचीन वाराणसी : एक पुरातत्व परिप्रेक्ष्य, आर्यन बुक्स इंटरनेशनल+बर्विक , डेनिसन , ए वॉक अलॉन्ग द गंगा , 1986,
10. पी.121 वाटर्स, थॉमस, (1904) : युआन–च्वांग ट्रैवेल्स भारत, लंदन।
11. अल्टेकर ए.एस (1948) :प्राचीन भारत में शिक्षा, बनारसी।
12. शतपथ ब्राह्मण ,13–5,4–19।
13. मुखर्जी, आर.के.(1957) :प्राचीन भारतीय शिक्षा, बम्बई।
14. फॉसबोल, जातक बनाम, पी.263।
15. कोवेल, जातक संख्या .123,150।
16. चट्टोपाध्याय, अपर्णा (1986) :वाराणसी।
17. बील, एस.रू पश्चिमी दुनिया का बौद्ध रिकॉर्ड, खंडII
18. पांडे, राजेंद्र (1979) : काशी :द एजेस, दिल्ली।
19. भविष्य पुराण, ब्रह्मखंड, अध्याय। 512-3
20. सुकुल, कुबेर नाथ (1974) :वाराणसी डाउन द एज, पटना।
21. राणा, पी बी सिंह (2005) :बनारस द सिटी रिवील्ड, मुंबई।
22. शर्मा, रचना (2010) :काशीखंड और काशी, वाराणसी पी. ,263।
23. मोतीचंद (2010), काशी का इतिहास, वाराणसी।
24. सिंह, सरीनारू भारत अकेला ग्रह,।
25. मित्रा, स्वाति (2002) :गुड अर्थ वाराणसी सिटी गाइड।
26. यादव, मिथिलेश कुमार (2012) : प्राचीन से आधुनिक तक हिंदुस्तान टाइम्स, 30 अक्टूबर 2012 से प्राप्त